☛ रौशन पाठक

दीवाना

वो तेरा नजरों के सामनें अचानक से आना,
गालों से उठाकर बालों को पीछे तक ले जाना।
इस कदर मेरे ऑखों में बस गई,
तेरी उस एक झलक से हुआ हूँ दीवाना ।

वो गर्व से तेरा गर्दन उठाना,
और शर्म से नजरें झुकाना ।
उस पल की तेरी हर अदा भा गई
तेरी अदाओं का हुआ हूँ दीवाना ।

मुझे देखकर तेरा ऑखें झुकाना,
वो बलखाते हुये करीब से गुजर जाना ।
तेरी जुल्फों की महक यादों में रह गई,
तेरी खुशबू से हुआ हूँ दीवाना ।

तेरी ऑखों का मेरी आखों से टकराना,
झुकाकर पलकों को तेरा वो शर्माना।
मेरे ऑखो को तेरी ऑखे भा गई
तेरी चमकती ऑखें से हुआ हूँ दीवाना।

वो तेरा इतरा कर बलखा कर चले जाना
पलट कर मेरी ओर शर्मा कर मुस्कुराना
मुस्कुराती अधरें सीने में इस तरह चुभ गई
तेरी मुस्कुराहट का हुआ हूँ दीवाना।

दिन तनहाई में तेरी याद में बिताना,
रातें जागकर तेरे लिये ख्वाब सजाना।
लगता है मुझे तुझसे मोहब्बत हो गई है,
तेरी मोहब्बत में हुआ हूँ दीवाना ।

पहले मोहब्बत का पहला है अफसाना
दो पल नजरों मिली, फिर पड़ा बिछड़ जाना।
तेरी तलाश में नजरे है जुट गई,
तुझे ढूढने में हुआ हूँ दीवाना।

तुझे खुद चलकर पड़े मेरे घर आना,
आकर तुझे पड़े मेरी बाहों में बस जाना।
है किस्मत से उम्मीदें बंध गई,
इन्हीं उम्मादो में हुआ हूँ दीवाना ।

इतनी है गुजारिश ऐ मलिका–ए–यौवन,
कि मेरी राह में फिर आना।
एक झलक में, तेरे प्यार में है रौशन दीवाना ।
इंतजार करेगा रौशन, उसके किस्मत से बंध जाना।